

Ganesh Chalisa Lyrics

Ganesh Chalisa Lyrics in Hindi

जय गणपति सदगुणसदन, कविवर बदन कृपाल ।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल ॥

जय जय जय गणपति गणराजू । मंगल भरण करण शुभ काजू ॥
जय गजबदन सदन सुखदाता । विश्व विनायक बुद्धि विधाता ॥

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन । तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ॥
राजत मणि मुक्तन उर माला । स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूल । मोदक भोग सुगन्धित फूल ॥
सुन्दर पीताम्बर तन साजित । चरण पादुका मुनि मन राजित ॥

धनि शिवसुवन षडानन भ्राता । गौरी ललन विश्व-विख्याता ॥
ऋद्धि-सिद्धि तव चंवर सुधारे । मूषक वाहन सोहत द्यारे ॥

कहौ जन्म शुभ-कथा तुम्हारी । अति शुचि पावन मंगलकारी ॥
एक समय गिरिराज कुमारी । पुत्र हेतु तप कीन्हे भारी ॥

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा । तब पहुंच्यो तुम धरि दधिज रुपा ॥
अतिथि जानि कै गौरि सुखारी । बहुविधि सेवा करी तुम्हारी ॥

अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा । मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ॥
मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला । बिना गर्भ धारण, यहि काला ॥

गणनायक, गुण ज्ञान निधाना । पूजित प्रथम, रूप भगवाना ॥
अस कहि अन्तर्धान रूप है । पलना पर बालक स्वरूप है ॥

बनि शिशु, रुदन जबहिं तुम ठाना । लखि मुख सुख नहिं गौरि समाना ॥
सकल मगन, सुखमंगल गावहिं । नभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं ॥

शम्भु, उमा, बहु दान लुटावहिं । सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं ॥
लखि अति आनन्द मंगल साजा । देखन भी आये शनि राजा ॥

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं । बालक, देखन चाहत नाहीं ॥
गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो । उत्सव मोर, न शनि तुहि भायो ॥

कहन लगे शनि, मन सकुचाई । का करिहौ, शिशु मोहि दिखाई ॥
नहिं विश्वास, उमा उर भयऊ । शनि सों बालक देखन कहाऊ ॥

पडतहिं, शनि दृग कोण प्रकाशा । बोलक सिर उड़ि गयो अकाशा ॥
गिरिजा गिरी विकल हुए धरणी । सो दुख दशा गयो नहीं वरणी ॥

हाहाकार मच्यो कैलाशा । शनि कीन्हे लखि सुत को नाशा ॥
तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधायो । काटि चक्र सो गज शिर लाये ॥

बालक के धड़ ऊपर धारयो । प्राण, मंत्र पढ़ि शंकर डारयो ॥
नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे । प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वन दीन्हे ॥

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा । पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ॥
चले षडानन, भरमि भुलाई । रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई ॥

धनि गणेश कहि शिव हिय हरषे । नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ॥
चरण मातु-पितु के धर लीन्हें । तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ॥

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई । शेष सहसमुख सके न गाई ॥
मैं मतिहीन मलीन दुखारी । करहुं कौन विधि विनय तुम्हारी ॥

भजत रामसुन्दर प्रभुदासा । जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा ॥
अब प्रभु दया दीन पर कीजै । अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै ॥

श्री गणेश यह चालीसा । पाठ करै कर ध्यान ॥
नित नव मंगल गृह बसै । लहे जगत सन्मान ॥

सम्बत अपन सहस्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश ।
पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश ॥

Ganesh Chalisa Lyrics in English and Hinglish

Jai Ganapati Sadgunasadan, Kavivar Badan Kripal.
Vighn Haran Mangal Karan, Jai Jai Girijalal.

Jai Jai Jai Ganapati Ganraaju. Mangal Bharan Karan Shubh Kaaju.
Jai Gajabdan Sadan Sukhdhaata. Vishw Vinayak Buddhi Vidhaata.

Vakra Tunda Shuchi Shunda Suhaavan. Tilak Tripund Bhaal Man Bhaavan.
Rajat Mani Muktan Ur Maala. Swarn Mukut Shir Nayan Vishala.

Pustak Paani Kuthaar Trishoolam. Modak Bhog Sugandhit Phoolam.
Sundar Peetambar Tan Saajit. Charan Paaduka Muni Man Rajit.

Dhani Shivasun Shadanan Bhrata. Gauri Lalan Vishw-Vikhyaata.
Riddhi-Siddhi Tav Chamvar Sudhaare. Mooshak Vahan Sohat Dghaare.

Kaho Janm Shubh-Katha Tumhaari. Ati Shuchi Paavan Mangalkaari.
Ek Samay Giriraj Kumari. Putra Hetu Tap Keeho Bhaari.

Bhayo Yajna Jab Poorn Anupa. Tab Pahuncha Tum Dhari Dhij Roopa.
Atithi Jaane Kai Gauri Sukhaari. Bahuvidhi Seva Kari Tumhaari.

Ati Prasann Hai Tum Var Diinhaa. Maatu Putra Hit Jo Tap Kiinhaa.
Milahi Putra Tuhin, Buddhi Vishala. Bina Garbh Dharan, Yah Kala.

Gananaayak, Gun Gyaan Nidhana. Poojit Pratham, Roop Bhagawana.
As Kahin Antardhaan Roop Hai. Palna Par Baalak Swarup Hai.

Bani Shishu, Rudan Jabahin Tum Thaanaa. Lakhi Mukh Sukhin Naahi Gauri Samaanaa.
Sakal Magan, Sukhmangal Gaavahin. Nabh Te Suran, Suman Varshaavahin.

Shambhu, Uma, Bahu Daan Lutavahin. Sur Munijan, Sut Dekhan Aavahin.
Lakhi Ati Anand Mangal Saja. Dekhan Bhi Aaye Shani Raaja.

Nij Avgun Guni Shani Man Maahin. Baalak, Dekhan Chahat Naahi.
Giri Ja Kachu Man Bhed Badhayo. Utsav Mor, Na Shani Tuh Bhayo.

Kahan Lage Shani, Man Sakuchaaee. Kaa Karau, Shishu Mohi Dikhaai.
Nahin Vishwas, Uma Ur Bhayoo. Shani Son Baalak Dekhan Kahau.

Padtahn, Shani Drig Kon Prakaashaa. Bolak Sir Udi Gayo Akaashaa.
Giri Ja Girin Vikal Hue Dharee. So Dukh Dasha Gayo Nahin Varanee.

Hahakaar Machyo Kailaashaa. Shani Keenho Lakhi Sut Ko Naasha.
Turat Garud Chadhi Vishnu Sidhaayo. Kaat Chakkar So Gaj Shir Laaye.

Baalak Ke Dhad Upar Dhaaryo. Praan, Mantra Padh Shankar Dhaaryo.
Naam Ganesh Shambhu Tab Kiinhe. Pratham Poojy Buddhi Nidhi, Van Diinhe.

Buddhi Pariksha Jab Shiv Kiinhe. Prithvi Kar Pradakshina Liinhe.
Chale Shadanan, Bharam Bhulaayi. Rache Baith Tum Buddhi Upaayi.

Dhani Ganesh Kahi Shiv Hiy Harse. Nabh Te Suran Suman Bahu Barshe.
Charan Maatu-Pitu Ke Dhar Liinhe. Tinke Saat Pradakshina Kiinhe.

Tumhari Mahima Buddhi Badaai. Shesh Sahas-Mukh Sake Na Gaaai.
Main Matihin Maleen Dukhaari. Karahu Kaun Vidhi Vinay Tumhaari.

Bhajat Raamsundar Prabhu Daas. Jag Prayag, Kakra, Durvaasa.
Ab Prabhu Daya Deen Par Keejai. Apni Bhakti Shakti Kachu Dijai.

Shri Ganesh Yah Chaleesa. Paat Karai Kar Dhyaan.
Nit Nav Mangal Grih Basai. Lahe Jagat Sanmaan.

Samvat Apan Sahastr Dash, Rishi Panchami Dinesh.
Poorn Chaleesa Bhayo, Mangal Moorti Ganesh.

Ganesh Chalisa Meaning in Hindi

जय गणपति सदगुणसदन, कविवर बदन कृपाल ।

जय गणपति सदगुणसदन :

इस पंक्ति में भगवान गणेश का जयकारा किया गया है, जो सदगुणों का आश्रय हैं ।

कविवर बदन कृपाल :

“कविवर” का अर्थ है कवियों में श्रेष्ठ, और “कृपाल” का मतलब दयालु है । यहाँ गणेश जी के रूप और दया का वर्णन किया गया है ।

विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल ॥

विघ्न हरण मंगल करण :

गणेश जी विघ्नों को दूर करने वाले और मंगलकारी हैं ।

जय जय गिरिजालाल :

यह पंक्ति गणेश जी को “गिरिजालाल” कहकर पुनः जयकारा करती है, जो भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र हैं ।

जय जय जय गणपति गणराजू ।

गणेश जी की महिमा का गुणगान किया जा रहा है और उन्हें गणों का राजा कहा जा रहा है ।

मंगल भरण करण शुभ काजू ॥

यह पंक्ति यह बताती है कि गणेश जी शुभ कार्यों को संपन्न करने वाले हैं।

जय गजबदन सदन सुखदाता ।

गणेश जी को “गजबदन” कहा गया है, अर्थात् उनके चेहरे का रूप बहुत सुंदर है। उन्हें सुखों का दाता माना गया है।

विश्व विनायक बुद्धि विधाता ॥

गणेश जी को “विश्व विनायक” कहकर उनके सभी विश्ववासियों के लिए बुद्धि देने वाले माना गया है।

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन ।

यह पंक्ति गणेश जी के शरीर का वर्णन करती है ; उनका सिर वक्र (घुमावदार) है और शुद्धता का प्रतीक है।

तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ॥

यह उनकी भुजाओं पर तीन रेखाओं (त्रिपुण्ड) के तिलक को दर्शाता है, जो भक्तों को प्रिय है।

राजत मणि मुक्तन उर माला ।

गणेश जी की छाती पर रजत और माणिक के हार का वर्णन किया गया है।

स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥

गणेश जी के सिर पर स्वर्ण का मुकुट है और उनकी आंखें विशाल हैं, जो उन्हें दिव्य रूप देती हैं।

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं ।

यह पंक्ति बताती है कि गणेश जी एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में कुठार (कुदाल), और तीसरे में त्रिशूल धारण करते हैं।

मोदक भोग सुगन्धित फूलं ॥

गणेश जी को मोदक का भोग अर्पित किया जाता है, साथ ही सुगंधित फूलों की भी बात की गई है।

सुन्दर पीताम्बर तन साजित ।

गणेश जी ने सुंदर पीले वस्त्र पहन रखे हैं।

चरण पादुका मुनि मन राजित ॥

गणेश जी के चरणों की पादुका मुनियों के मन को प्रसन्न करती हैं।

धनि शिवसुवन षडानन भ्राता ।

गणेश जी को भगवान शिव का धन और षडानन (भगवान कार्तिकेय) का भाई बताया गया है।

गौरी ललन विश्व-विख्याता ॥

गणेश जी को माता पार्वती का पुत्र और विश्व में प्रसिद्ध कहा गया है।

ऋद्धि-सिद्धि तव चंवर सुधारे ।

गणेश जी की सेवा में ऋद्धि और सिद्धि (धन और ज्ञान) के चंवर चलाए जाते हैं।

मूषक वाहन सोहत दधारे ॥

गणेश जी का वाहन चूहा है, और यह पंक्ति उनकी शक्तियों को दर्शाती है।

कहौ जन्म शुभ-कथा तुम्हारी ।

यह पंक्ति गणेश जी के शुभ जन्म की कथा सुनाने का आग्रह कर रही है।

अति शुचि पावन मंगलकारी ॥

गणेश जी की कथा को पवित्र और मंगलकारी बताया गया है।

एक समय गिरिराज कुमारी ।

यह पंक्ति बताती है कि एक बार पर्वत राज की बेटी (पार्वती) ने पुत्र प्राप्ति के लिए तप किया था।

पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी ॥
पार्वती ने पुत्र प्राप्ति के लिए बहुत कठोर तप किया था ।

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा ।
जब यज्ञ पूरा हुआ, तो एक विशेष रूप में गणेश जी प्रकट हुए ।

तब पहुंच्यो तुम धरि दधिज रूपा ।
गणेश जी यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए धरती पर आए ।

अतिथि जानि कै गौरि सुखारी ।
गौरी माता ने गणेश जी को अतिथि मानकर उनकी सेवा की ।

बहुविधि सेवा करी तुम्हारी ॥
गौरी माता ने गणेश जी की कई प्रकार से सेवा की ।

अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा ।
गणेश जी प्रसन्न होकर वरदान देने वाले हैं ।

मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ॥
यह पंक्ति बताती है कि माता ने पुत्र के लिए तप किया था ।

मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला ।
गणेश जी को बुद्धिमान पुत्र प्रदान करने का आश्वासन दिया गया है ।

बिना गर्भ धारण, यहि काला ॥
गणेश जी का जन्म बिना गर्भ धारण के हुआ ।

गणनायक, गुण ज्ञान निधाना ।
गणेश जी को “गणनायक” कहा गया है, जो गुणों और ज्ञान के भंडार हैं ।

पूजित प्रथम, रूप भगवाना ॥
गणेश जी को पहले पूजने वाले देवता के रूप में मान्यता दी गई है ।

अस कहि अन्तर्धान रूप है ।
यह पंक्ति बताती है कि वे अंतर्धान (अदृश्य) होकर बालक रूप धारण करते हैं ।

पलना पर बालक स्वरूप है ॥
गणेश जी शिशु रूप में पलने में हैं ।

बनी शिशु, रुदन जबहिं तुम ठाना ।
जब गणेश जी शिशु रूप में आते हैं, तब उनका रुदन सुनाई देता है ।

लखि मुख सुख नहिं गौरि समाना ॥
गौरी माता उनके चेहरे की खुशी को देखकर आनंदित होती हैं ।

सकल मगन, सुखमंगल गावहिं ।
सभी देवता आनंदित होकर मंगल गीत गाते हैं ।

नभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं ॥
स्वर्ग से फूलों की वर्षा होती है ।

शम्भु, उमा, बहु दान लुटावहिं ।
भगवान शिव और माता पार्वती गणेश जी को धन और आशीर्वाद देते हैं ।

सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं ॥
सभी देवता और ऋषि-मुनि गणेश जी को देखने के लिए आते हैं।

लखि अति आनन्द मंगल साजा।
गणेश जी के दर्शन से सभी में अपार आनंद और मंगल का वातावरण बन जाता है।

देखन भी आये शनि राजा ॥
यह पंक्ति बताती है कि शनि देवता भी गणेश जी को देखने आए।

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं।
शनि देवता अपने अवगुणों के बारे में सोचते हैं।

बालक, देखन चाहत नाहीं ॥
वे बालक गणेश जी को देखने में संकोच कर रहे हैं।

गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो।
गौरी माता शनि के मन की भेद को जानती हैं।

उत्सव मोर, न शनि तुहि भायो ॥
गौरी माता कहती हैं कि यह उत्सव मेरा है, तुम परवाह मत करो।

कहन लगे शनि, मन सकुचाई।
शनि देवता कहते हैं और संकोच में पड़ते हैं।

का करिहौ, शिशु मोहि दिखाई ॥
शनि कहते हैं कि मैं इस बालक को कैसे देखूं?

नहिं विश्वास, उमा उर भयऊ।
गौरी माता का मन शनि पर विश्वास नहीं करता।

शनि सों बालक देखन कहाऊ ॥
गौरी माता कहती हैं कि तुम शनि से बालक को देखो।

पडतहिं, शनि दृग कोण प्रकाशा।
जब शनि ने गणेश जी को देखा, तो उसकी आंखों में प्रकाश आया।

बोलक सिर उड़ि गयो अकाशा ॥
बालक गणेश का सिर आसमान में उड़ गया।

गिरिजा गिरीं विकल हुए धरणी।
गौरी माता ने देखा कि उनका पुत्र गायब हो गया है।

सो दुख दशा गयो नहीं वरणी ॥
यह दृश्य उनके लिए दुखद था, जिसे वह नहीं सहन कर पाई।

हाहाकार मच्यो कैलाशा।
कैलाश पर्वत पर हाहाकार मच गया।

शनि कीन्हो लखि सुत को नाशा ॥
शनि ने गणेश जी को देखकर चिंता में पड़ गया।

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधायो।
तुरंत गरुड़ पर बैठकर भगवान विष्णु आए।

काटि चक्र सो गज शिर लाये ॥
उन्होंने अपने चक्र से गज के सिर को काट दिया ।

बालक के धड़ ऊपर धारयो ।
गणेश जी के धड़ पर उस गज का सिर रख दिया गया ।

प्राण, मंत्र पढ़ि शंकर डारयो ॥
भगवान शिव ने मंत्र पढ़कर गणेश जी को जीवन प्रदान किया ।

नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे ।
गणेश जी को “गणेश” नाम से पुकारा गया ।

प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वन दीन्हे ॥
गणेश जी को पहले पूजने वाला और बुद्धि का खजाना कहा गया ।

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा ।
भगवान शिव ने गणेश जी की बुद्धि की परीक्षा ली ।

पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ॥
गणेश जी ने पृथ्वी के चारों ओर प्रदक्षिणा की ।

चले षडानन, भरमि भुलाई ।
भगवान कार्तिकेय (षडानन) ने भ्रमित होकर गणेश जी को भुला दिया ।

रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई ॥
गणेश जी ने अपनी बुद्धि से यह स्थिति बनाई ।

धनि गणेश कहि शिव हिय हरषे ।
भगवान शिव गणेश जी की बुद्धिमत्ता से प्रसन्न होते हैं ।

नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ॥
आसमान से देवता फूलों की वर्षा करते हैं ।

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें ।
गणेश जी ने अपने माता-पिता के चरणों को धारण किया ।

तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ॥
उन्होंने अपने माता-पिता के चारों ओर सात प्रदक्षिणाएँ कीं ।

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई ।
गणेश जी की महिमा और बुद्धि का गुणगान किया गया है ।

शेष सहसमुख सके न गाई ॥
भगवान विष्णु और अन्य देवताओं भी उनकी महिमा को नहीं गा सकते ।

मैं मतिहीन मलीन दुखारी ।
भक्त अपने आप को मूर्ख और दुखी बताता है ।

करहुं कौन विधि विनय तुम्हारी ॥
भक्त भगवान से विनती करता है कि वह उसकी कठिनाइयों को दूर करें ।

भजत रामसुंदर प्रभुदासा ।
यह भक्त उन भक्तों का उल्लेख कर रहा है जो भगवान राम के सुंदर रूप की भक्ति करते हैं ।

जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा ॥

यह नाम उन स्थलों और ऋषियों का उल्लेख कर रहा है जो भगवान की भक्ति करते हैं।

अब प्रभु दया दीन पर कीजै।

भक्त भगवान से दया की प्रार्थना करता है।

अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै ॥

भक्त भगवान से भक्ति की शक्ति देने की याचना करता है।

श्री गणेश यह चालीसा।

यह पंक्ति बताती है कि यह चालीसा गणेश जी के लिए है।

पाठ करै कर ध्यान ॥

जो इस चालीसा का पाठ करते हैं, वे ध्यान लगाते हैं।

नित नव मंगल गृह बसै।

जो भक्त इस चालीसा का पाठ करते हैं, उनके घर में हमेशा मंगल रहता है।

लहे जगत सन्मान ॥

इससे भक्त को पूरे जगत में सम्मान मिलता है।

सम्बत अपन सहस्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।

यह पंक्ति इस चालीसा के पाठ की तारीख और समय का उल्लेख करती है।

पूरन चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश ॥

अंत में, चालीसा का पूजन पूरी हो गया है, और गणेश जी को मंगल रूप में पूजा गया है।

Ganesh Chalisa Meaning in English

The **Ganesh Chalisa** is a devotional hymn dedicated to Lord Ganesha, the remover of obstacles and the god of wisdom and intellect. It consists of 40 verses (chalisa means forty) that extol Ganesha's virtues, stories, and significance.

Verse-by-Verse Meaning

1. Sri Ganesh, the Supreme Lord

- Acknowledges Ganesha as the supreme being and requests his blessings.

2. Namo Namah, Obeying and Bowing Down

- Expresses reverence and humility before Ganesha.

3. The Provider of Happiness and Wealth

- Recognizes Ganesha as a source of joy and prosperity.

4. **The One with a Large Belly**

- Describes Ganesha's physical appearance, symbolizing his ability to absorb all difficulties.

5. **Crowned with a Moon and Holding a Modak**

- Illustrates Ganesha's divine qualities, with the modak representing the rewards of hard work.

6. **The Teacher of Knowledge**

- Highlights Ganesha's role as a teacher, guiding devotees toward wisdom.

7. **The Remover of Obstacles**

- Acknowledges Ganesha's ability to clear the path for success and happiness.

8. **All Deities Come to Worship Him**

- States that even

40 mini

You said:

give line by line

ChatGPT said:

ChatGPT

Here's a line-by-line explanation of the **Ganesh Chalisa** in English:

Verse 1

- **Jai Ganapati Sadguna Sadan**

(Hail Ganesha, the abode of virtues)

This line praises Ganesha as the embodiment of good qualities and virtues.

- **Kavivar Badan Kripal**

(O poetically endowed, compassionate one)

Here, Ganesha is referred to as the compassionate one, emphasizing his kind nature.

- **Vighnahan Mangal Karan**
(He who removes obstacles and brings auspiciousness)
Ganesha is recognized for removing obstacles and ensuring that good things happen.
- **Jai Jai Girija Lal**
(Hail, hail, the son of Goddess Parvati)
This line acknowledges Ganesha as the son of Goddess Parvati, celebrating his divine lineage.

Verse 2

- **Jai Jai Jai Ganapati Ganraajoo**
(Hail, hail, hail, Ganesha, the king of Ganas)
This line glorifies Ganesha as the king of the Ganas (divine attendants of Shiva).
- **Mangal Bharan Karan Shubh Kajoo**
(He who makes auspicious tasks happen)
Emphasizes Ganesha's role in ensuring that auspicious events take place.

Verse 3

- **Jai Gajabadan Sadan Sukhdatas**
(Hail, Ganesha, the one with the elephant face who grants happiness)
Celebrates Ganesha's elephantine form and his ability to bring joy.
- **Vishwa Vinayak Buddhi Vidhata**
(Ganesha, the creator of wisdom in the world)
Recognizes him as the source of wisdom for all beings.

Verse 4

- **Vakratunda Shuchi Shunda Suhawin**
(He with a curved trunk, pure, and pleasing to behold)
Describes Ganesha's physical attributes, which symbolize his uniqueness.
- **Tilak Tripund Bhaal Man Bhavan**
(He who wears a sacred mark of three lines on his forehead)
This represents his spiritual significance and connection to divine protection.

Verse 5

- **Rajata Mani Mukutan Ura Maala**
(Adorned with a necklace of precious gems)
Highlights Ganesha's opulence and the divine beauty of his adornments.
- **Swarn Mukut Shir Nayan Vishala**
(Wearing a golden crown with large eyes)
Indicates his majestic presence and the ability to see beyond the material world.

Verse 6

- **Pustak Paani Kuthar Trishoolam**
(Holding a book, an axe, and a trident)
Symbolizes knowledge (book), the removal of ignorance (axe), and spiritual power (trident).
- **Modak Bhog Sugandhit Phoolam**
(Offering sweet dumplings and fragrant flowers)
Represents the offerings made to Ganesha, signifying gratitude and devotion.

Verse 7

- **Sundar Peetambar Tan Sajeet**
(Dressed in beautiful yellow garments)
Emphasizes Ganesha's divine attire, symbolizing purity and joy.
- **Charan Paduka Muni Man Rajit**
(His feet are worshipped by sages)
Indicates the reverence that sages have for Ganesha.

Verse 8

- **Dhani Shiv-Suvan Shadanan Bhrata**
(The wealthy son of Shiva, brother of the six-faced one)
Acknowledges Ganesha's connection to Lord Shiva and his brother, Kartikeya.
- **Gauri Lalan Vishva-Vikhyata**
(The beloved of Goddess Gauri, known throughout the world)
Recognizes Ganesha's relationship with Goddess Gauri (Parvati) and his global fame.

Verse 9

- **Riddhi-Siddhi Tav Chamar Sudhare**
(Riddhi and Siddhi (prosperity and success) fan you)
Indicates that divine energies surround and serve Ganesha.
- **Mooshak Vahan Sohat Dghare**
(The mouse is your vehicle, symbolizing humility)
Highlights Ganesha's unique mount, the mouse, symbolizing the ability to overcome ego.

Verse 10

- **Kaho Janm Shubh-Katha Tumhari**
(Let us tell the auspicious story of your birth)
Invites recounting the blessed tale of Ganesha's origin.
- **Ati Shuchi Pavan Mangal Kaari**

(You are pure, sacred, and auspicious)

Emphasizes Ganesha's purity and ability to bring auspiciousness.

Verse 11

- **Ek Samay Giriraj Kumari**
(Once upon a time, the mountain king's daughter)
Refers to Goddess Parvati as the daughter of the mountain king.
- **Putra Hetu Tap Kinho Bhari**
(Did intense penance to have a son)
Indicates that Parvati undertook severe austerities to have a son.

Verse 12

- **Bhayo Yagya Jab Poorn Anupaa**
(When the grand Yagna was completed)
Refers to the ceremonial worship that facilitated Ganesha's arrival.
- **Tab Pahunchyo Tum Dhari Dghij Roopa**
(Then you appeared in the form of a child)
States that Ganesha manifested as a child during this auspicious time.

Verse 13

- **Atithi Jaani Kai Gauri Sukhaari**
(Recognizing you as a guest, Goddess Parvati welcomed you)
Highlights the joy and celebration of Ganesha's arrival.
- **Bahu Vidhi Seva Kari Tumhaari**
(She served you in many ways)
Indicates the love and care that Goddess Parvati showed towards Ganesha.

Verse 14

- **Ati Prasanna Hai Tum Var Dinha**
(You were very pleased and granted her a boon)
Illustrates Ganesha's happiness, leading to blessings for his mother.
- **Maatu Putra Hit Jo Tap Kinha**
(That for her son's welfare, she performed penance)
Indicates the divine connection between Ganesha and his mother.

Verse 15

- **Milhi Putra Tuhin, Buddhi Vishala**
(You were granted intelligence and wisdom)
Refers to the special blessings Ganesha received regarding intellect.
- **Bina Garbh Dharn, Yahi Kaala**
(Without conception, this was possible)
Emphasizes the miraculous nature of Ganesha's birth.

Verse 16

- **Gananayak, Gun Gyaan Nidhana**
(The leader of the Ganas, the treasure of qualities and wisdom)
Acknowledges Ganesha's leadership among the divine beings and his wisdom.
- **Poojita Pratham, Roop Bhagwana**
(Worshipped first, O Lord with a beautiful form)
Indicates Ganesha's importance as the first deity to be worshipped.

Verse 17

- **As Kahi Antardhaan Roop Hai**
(Saying this, he became invisible)
Suggests that Ganesha possesses the power of invisibility.
- **Palna Par Baalak Swarup Hai**
(He takes the form of a child when cradled)
Refers to his childlike form, which embodies innocence.

Verse 18

- **Bani Shishu, Rudan Jabhin Tum Thana**
(When you decided to cry as a child)
Describes Ganesha's playful nature as a child.
- **Lakshi Mukha Sukha Nahi Gauri Samana**
(Gauri was not as joyful as she appeared)
Indicates the concern of Goddess Parvati when Ganesha cried.

Verse 19

- **Sakal Magan, Sukhmangal Gaavahi**
(Everyone was joyous and singing praises)
Indicates the happiness that surrounded Ganesha's presence.
- **Nabh Te Suran, Suman Varshaahi**

(Heavenly beings showered flowers from the sky)

Describes how the gods celebrated Ganesha's arrival.

Verse 20

- **Shambhu, Uma, Bahu Daan Lutawahi**
(Shiva, Parvati, and many deities bestowed gifts)
Recognizes the blessings and gifts from various deities.
- **Sur Munijan, Sut Dekhan Aavahi**
(Gods and sages came to see the child)
Indicates the divine interest in Ganesha as a child.

Verse 21

- **Lakhi Ati Anand Mangal Saja**
(Seeing him brought immense joy and celebration)
States that Ganesha's presence brought happiness.
- **Dekhan Bhi Aaye Shani Raja**
(Even Shani (Saturn) came to see him)
Indicates that even the planet Saturn was curious about Ganesha.

Verse 22

- **Nij Avgun Guni Shani Man Mahi**
(Shani reflected on his own qualities)
This line indicates Shani's self-reflection upon seeing Ganesha.
- **Baalak, Dekhan Chahat Nahin**
(He did not want to see the child)
Shani felt reluctant to face Ganesha.

Verse 23

- **Girija Kachu Man Bhed Badhayo**
(Goddess Parvati sensed some discord)
Indicates Goddess Parvati's concern regarding Shani's feelings.
- **Utsav Mor, Na Shani Tuhai Bhayo**
(This celebration was not for Shani)
Suggests that Shani felt excluded from the joy.

Verse 24

- **Kahan Lage Shani, Man Sakuchai**
(Shani began to speak, feeling shy)
Indicates Shani's hesitation to express himself.
- **Ka Karihau, Shishu Mohi Dikhai**
(What should I do, I cannot face the child)
Reflects Shani's inner turmoil.

Verse 25

- **Nahin Vishwas, Uma Ur Bhayau**
(Not trusting, Uma felt distressed)
Goddess Parvati felt anxious about the situation.
- **Shani Son Baalak Dekhan Kahau**
(Shani spoke about seeing the child)
Indicates that Shani was contemplating facing Ganesha.

Verse 26

- **Padati Shani Drig Kon Prakashaa**
(Shani's eyes fell upon the child)
Refers to Shani finally looking at Ganesha.
- **Baalak Sir Udi Gayo Akasha**
(The child flew into the sky)
Symbolizes Ganesha's divine powers as he ascended.

Verse 27

- **Girija Girin Vikala Hue Dharti**
(Parvati became distressed, and the earth trembled)
Indicates the turmoil caused by Ganesha's departure.
- **So Dukh Dasha Gayo Nahin Varani**
(That pain was unbearable and could not be endured)
Reflects the deep sorrow felt by Goddess Parvati.

Verse 28

- **Hahakaar Machyo Kailasha**
(A great uproar arose in Kailash)
Describes the chaos and panic among the gods.
- **Shani Kinhoo Lakhi Sut Ko Naasha**

(Shani was blamed for the child's loss)

Indicates that Shani was held responsible for Ganesha's fate.

Verse 29

- **Turat Garud Chadi Vishnu Siddhaya**
(Quickly, Garuda carried Vishnu to the rescue)
Refers to Lord Vishnu's swift action to save Ganesha.
- **Kati Chakra So Gaj Shir Laye**
(He cut the demon's head and brought it back)
This describes how Vishnu restored Ganesha's head.

Verse 30

- **Baalak Ke Dhad Upar Dhaaryo**
(Placed the elephant head atop the child's body)
Refers to Ganesha receiving an elephant head.
- **Praan, Mantra Padhi Shankar Daryo**
(With mantras, Lord Shiva restored his life)
Indicates the revival of Ganesha's life through divine chants.

Verse 31

- **Naam Ganesh Shambhu Tab Kiye**
(He was named Ganesh by Lord Shiva)
Refers to Shiva naming Ganesha after his revival.
- **Pratham Poojy Buddhi Nidhi, Van Dhiye**
(First worshipped as the treasure of wisdom)
Acknowledges Ganesha's status as the first deity to be worshipped for wisdom.

Verse 32

- **Buddhi Pariksha Jab Shiv Kinha**
(Shiva tested Ganesha's wisdom)
Indicates a test of Ganesha's intellect by Lord Shiva.
- **Prithvi Kar Pradakshina Leenhi**
(He circled the earth)
Refers to Ganesha performing a circumambulation of the earth.

Verse 33

- **Chale Shadanan, Bharami Bhulai**
(Kartikeya wandered in confusion)
Describes Kartikeya's confusion during Ganesha's test.
- **Rache Baith Tum Buddhi Upai**
(You sat and devised a clever plan)
Indicates Ganesha's wisdom in outsmarting the situation.

Verse 34

- **Dhani Ganesh Kahi Shiv Hiy Harse**
(Lord Shiva was pleased with Ganesha's wisdom)
Indicates Shiva's joy at Ganesha's cleverness.
- **Nabh Te Suran Suman Barse**
(Heavenly beings showered flowers)
Describes the divine celebration that followed.

Verse 35

- **Charan Maatu-Pitu Ke Dhar Leenhi**
(He placed his feet at the feet of his parents)
Indicates Ganesha's humility and respect for his parents.
- **Tinke Saat Pradakshina Kiheen**
(Circumambulating them seven times)
Represents the reverence Ganesha showed to his parents.

Verse 36

- **Tumhari Mahima Buddhi Barai**
(Your glory and wisdom are vast)
Acknowledges Ganesha's immense intelligence and significance.
- **Shesh Sahas Mukha Sake Nahin Gai**
(Even countless beings cannot fully praise you)
Suggests that no one can adequately express Ganesha's greatness.

Verse 37

- **Main Matihin Maleen Dukhaari**
(I am a miserable being lacking wisdom)
Expresses humility and the plea for Ganesha's guidance.
- **Karhu Kaun Vidhi Vinay Tumhari**

(Who can worship you without your help?)

Acknowledges the need for Ganesha's grace in worship.

Verse 38

- **Bhajat Ram-Sundar Prabhu-Dasa**
(I am a servant of Lord Ram and the beautiful one)
Indicates devotion to Lord Ram and Ganesha.
- **Jag Prayag, Kakra, Durvasa**
(In the world, there are many paths to the divine)
Suggests that there are various ways to connect with the divine.

Verse 39

- **Ab Prabhu Daya Deen Par Keejai**
(Now, O Lord, please show mercy to the needy)
A prayer for compassion and blessings from Ganesha.
- **Apni Bhakti Shakti Kachu Deeji**
(Grant us strength in devotion)
Requests the divine strength to continue worshipping.

Verse 40

- **Shri Ganesh Yeh Chalisa**
(This is the Ganesh Chalisa)
Acknowledges the hymn dedicated to Ganesha.
- **Paath Karai Kar Dhyaan**
(Reciting it brings focus and devotion)
Indicates that chanting brings mindfulness and devotion.
- **Nit Nav Mangal Griha Basai**
(Every day brings auspiciousness to our homes)
Suggests that recitation brings blessings to the household.
- **Lahe Jagat Sanmaan**
(The world will respect and honor you)
Concludes by stating that devotion to Ganesha leads to global respect.
- **Samvat Apna Sahastra Dash, Rishi Panchami Dinesh**
(In the year 1000, on the day of Rishi Panchami)
Indicates the date of completion of this hymn.
- **Poorn Chalisa Bhayo, Mangal Murti Ganesh**
(The complete Chalisa is finished, O auspicious form of Ganesh)
Concludes with reverence for Ganesha, celebrating the completion of the hymn.